International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 1; January 2018; Page No. 06-08

कबीर व्यक्तित्व व दर्शन का समसामयिक प्रासांगिकता

राज कुमार लहरे
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय पी डी वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय, रायगढ, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश
कबीर कबीर थे– अनुपमेय, विलक्षण, निडर, युगद्रष्टा, सत्य के अनन्य उपासक, ज्ञानमार्ग के पथिक, एक फक्कड़ मसीहा, सरल, सरस व उदारमना व्यक्तित्व के धनी यद्यपि कठोर निर्णायक, सामाजिक नेता व सुधारक, वैज्ञानिक व तर्कपूर्ण चिंतक, प्रखर वक्ता तथा धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग, जाति, वंश, कुल, रंगभेद, उॅचनीच आदि भेदभाव के धूर विरोधी, प्रेममयी संवेदनात्मक ज्ञान द्वारा सत्यानुभूति कर बुध्द वाक्य 'अप्प दीपो भवः' से अनुप्राणित तथा सत्य ही ईश्वर है का प्रबल समर्थक, सामाजिक, सॉस्कृतिक, समता के विश्वासी, पारख दर्शन के प्रणेता, दलित, शोषित, कमजोर मजलूमों के सच्चा हितैषी, चाहे किसी कोण से देखो अपने आप में पूर्ण व्यक्तित्व! वास्तव में कबीर व्यक्ति नहीं, वरन् आज के लिए एक सोच है, चिंतन है, दर्शन है, राह और मंजिल भी!! समसामयिक परिवेश में यह ज्ञान अधिकाधिक प्रासंगिक होता जा रहा है; जिससे तत्कालिक समस्याओं का उचित समाधान हो सके। जिसे अनुयायीगण कबीर सिध्दांत का चौकाआरती, भजन, सत्संग, उपदेश आदि के माध्यम से लोक सेवार्थ प्रचारित व प्रसारित करते रहे हैं। अतः 21 वीं सदी में स्वस्थ वैश्वीकरण के लिए इसकी प्रासंगिकता निर्विवाद प्रतिपादित हो जाता है।

मूल शब्दः ज्ञान, प्रेम, संवेदना, पारख सिध्दांत, चौका आरती, आधुनिक वैश्वीकरण

प्रस्तावना
कबीर–काव्य में मुक्ति के नाम पर आडम्बर, दिखावा, कल्पना, रुढ़िवाद, कुरीतियों, ढ़ोंग–ढ़कोसला युक्त जीवनकर्म को कोसा व धिक्कारा है। काव्य के केन्द्र में साधारण निरीह जनता, जीवन के लिए जद्दोजहद हस्त लघु उद्योग करता एक श्रमशील साधारण व्यक्ति– कपड़ा बीनने वाला(कोष्टा) रंगाई करने वाला(रंगरेज) लोहा का औजार बनाने वाला(लोहार) सोना व चॉदी का जेवर बनाने वाला(सुनार) तेल निकालने वाला(तेली) साफ–सफाई करने वाला(भंगी) डोम, भिस्ती, नाई, धोबी, जैसी तत्कालीन समाज में निम्न समझे जाने वाली उपेक्षित, दलित, शोषित पीड़ित जातियों के जीवन स्तर में सुधार की जरुरत जो अपरिहार्य हो गया था, का विशद् वर्णन हुआ है। कबीर इन्हीं के सुधार लिए जीवन भर संघर्ष किया और कहा कि ये तभी मुख्य धारा में आकर मिथ्या जीवनशैली से मुक्त हो पायेंगे; जब इन्हें सत्य का ज्ञान होगा। इसके लिए मानव निर्मित किसी मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा गिरजाघर आदि जगह जाने की नहीं; वरन् समय के अनुरुप जीवनशैली में बदलाव की जरुरत है। उन्होंने स्पष्ट कहा–

मोको कहा ढूढ़े बंदें मैं तो तेरे पास में।
न मंदिर में, न मस्जिद में, न काबा, कैलाश में।।

आज लोगों के बीच आपसी सामंजस्य व सहिष्णुता हो, वैज्ञानिक सोच पैदा हो। जिस तरह मशीनों, संचार व औद्योगिक क्रांति को अपनाया जा रहा है, उसी तरह मानसिक समझ विकसित हो, सादा जीवन, उच्च विचार हो। तब मानव मानव एक समान, सबका साथ सबका विकास तथा समरसता के लिए लोकतांत्रिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सॉस्कृतिक मूल्यों व व्यवस्था पर विश्वास होगा। जो आध्यात्मिक मोक्ष का आधुनिक रुप है।
वैश्वीकरण के दौर में समस्याओं– आतंकवाद, नक्सलवाद, गृह अशांति, युवकों व शोषितों में असंतोष व मानसिक तनाव का समूल उन्मूलन अनिवार्य हो गया है। कबीर साहित्य सत्यानुभूत होने के कारण भेदाभेद मतावलंबियों को कर्कश लगता है। आज 21 वीं सदी में मजहबी चश्मों को निकाल कर देखने व सत्यमार्ग पर चलने की जरुरत है। जबकि वैश्विक परिदृश्य में समय के साथ यह भेदभाव और अधिक कठोर होता जा रहा है तथा दिन प्रतिदिन हिंसा, तनाव, सम्प्रदायिक दंगा क्रमशः बढ़ता जा रहा है। विकास का मापदंड आधुनिक भौतिक विकास के साथ–साथ नैतिक सदाचार व वैज्ञानिक सोच भी हो। जो कबीर दर्शन का मूलाधार निम्नवत् है–

लोकसेवक के रुप में समाज सुधारक
कबीरदास लोगों को जगाने का प्रयास करते रहे और समझाते रहे कि, अज्ञानता के कारण शारीरिक और मानसिक दुःख (कष्ट) होता है। जीवन में व्यक्ति ब्राह्य आडम्बारों, अंधविश्वासों, पाखण्डों, दिखावा, मिथकीय रुपकों में घिरा होने के कारण सत्य(यथार्थ) दर्शन से दूर कल्पना लोक में स्वर्ग/नर्क में फिरता हुआ; आदमी का मन जगत, माया–मोह, आत्मा–परमात्मा, लोक–परलोक, दुनिया–धंधा के फेरा में यहॉ चक्कर लगाता हुआ एक दिन इसी भागदौड़ में शरीरांत कर लेता है लेकिन इसके बाद भी मुक्ति को प्राप्त नहीं कर पाता और मन विचलित रह जाता है। फलस्वरुप समाज के कुछ चतुर लोग(वर्ग) इसी अज्ञानता का बेजा लाभ उठाते तथा शोषण करते हुए, अपना जीवन सुखमय कर लेता है। इन्हीं आडम्बरों से लोगों के जीवन को मुक्त करने का उपाय समझाते रहे कि–

'मंदिरवा में का करे जइबो, अपन घट के ही देव ल मनइबो।'

किसी का जीवन किसी के द्वारा सुधारा या बनाया नहीं जा सकता। मंदिर, मस्जिद, गिरजा, गुरुद्वारा आदि, मन को भ्रम में डालकर मानसिक गुलाम रखने की जगह है। जहॉ लोग नशापान जैसे कर

क्षणिक चेतना विहीन होकर झूमते हुए मिथकीय रसासिक्त अनुभूत करने लगते हैं कि, यही महामिलन (आत्मा–परमात्मा का मिलन– मोक्षदशा) है। कबीरदास जी समाज में व्याप्त ऐसे ही कृत्यों में सुधार करने के दृष्टि से वैज्ञानिक सोच के साथ जनचेतना जाग्रित करने हेतु आंदोलन चलाकर समाज सुधार करते हुए लोगों का निस्वार्थ सेवा किया।

भेदभाव के संकीर्णता से व्यक्ति व समाज को उपर उठाना

कबीरदास जी ने व्यक्ति और समाज को तोड़ने वाले तथ्यों का खुलकर विरोध व प्रतिकार किया है। धर्म, सम्प्रदाय, जाति, वर्ग, वंश, कुल, रंगरूप, छुआछूत, जात–पात, उॅच–नीच आदि भेदभाव मनुष्य को मानवता से नीचे गिराने का काम किया है और सच्चा धर्म मानव सेवा को माना। समाज में व्याप्त संकीर्णता को इन्होंने दूर करने का उपाय वैज्ञानिक व तार्किक तथा विवेकपूर्ण चिंतन करने को कहा। कबीरदास जी ने कहा कि– 'जात न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।' समाज में व्याप्त भेदभाव अज्ञानता का परिणाम है जिससे व्यक्ति अपने को दूसरों से श्रेष्ठ समझता है। जो साहित्य, संस्था, स्थान ऐसा ज्ञान पर आधारित रहा है, उनका भी उन्होंने विरोध किया।

सत्य व गुरु के प्रति अगाध आस्था व प्रेम

कबीर ने प्रेममय संवेदनात्मक ज्ञान को सत्य(ईश्वर स्वरुप) माना, मात्र कोरा ज्ञान को नहीं। उन्होंने साफ कहा है कि– 'ढ़ाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।' जिसके चित्त में सत है, उसी को परमाानंद मिल सकता है। सत्य लोगों के चरित्र में झलकना चाहिए और यह तभी संभव है जब कोई मन से लोभ, मोह, अहं, क्रोध, हिंसा, दुर्भावना(पूर्वाग्रह) आदि का त्याग कर दे। कबीर ने व्यक्तित्व के अंतःपक्ष की आत्मशुध्दि पर जोर देते हुए कहा कि– 'मन न रंगाये, रंगाये जोगी कपड़ा।' उन्होंने सदा मैं (अहं) के त्याग करने पर तुम(ईश्वर) का वास बताते हुए कहा कि– 'जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।' उन्होंने सदाचार (सत्यमय आचरण) में ईश्वर का वास बताया और ईश्वर का वास जहाँ हो, वहीं स्वर्ग समान होता है। इसके लिए पूजा, पाठ, भजन–कीर्तन, तीर्थाटन, दान–पुण्य करने की कतई जरूरत नहीं। 'चौदह भुवन भट्क्या, अब देखव घर आयी।' अर्थात अंततः व्यक्ति को बाहरी दुनिया से नहीं, वरन् अपने शरीर से ही मुक्ति का मार्ग मिलता है।

सत्य काव्य का परमात्मा के रुप में चित्रण

कबीर का सम्पूर्ण वामड्मय सत्ज्ञान पर टिका है, उन्होंने सतनाम तथा ऐसा कृत्य जो सत और यथार्थ पर अवलम्बित हो, परमात्मा कहा। चिरन्तन्, अविनाशी, सम्पूर्ण तथा श्रेष्ठ ही सत का अस्तित्व है। सतनाम का ज्ञान ध्यान, साधना, योग, आत्मबोध, आत्मदर्शन से संभव है। ऐसा करने पर जो वाणी प्रसारित होता है, वही सतकाव्य है, जो अकाट्य व अमर होता है, ऐसी वाणी से सच्चिदानंद की प्राप्ति होता है तथा यही रामरसायण है जो सतकाव्य की आत्मा है। इसीलिए सतकाव्य(ग्रंथ) को जीवंत परमात्मा कहते हैं। अतः कबीरदास जी का काव्य सतमय है अर्थात् हृदयंगम करने से आत्मज्ञान होता है कि संसार का सार सत्य है अर्थात् सत ही ईश्वर है।

बिम्ब, प्रतीक, रुपकों द्वारा भारतीय रहस्यवाद (संसार) का उद्घाटन

कबीर काव्य में सांकेतिक शब्दों का भरपूर प्रयोग हुआ है जिससे ईश्वर, जीव, जगत, आत्मा, परमात्मा, माया, भवसागर, ब्रम्ह का बिम्ब, प्रतीक, रूपकों से साधारण जन के लिए सहज हो सका है। उल्टी गंगा– इड़ा, समुद्र– संसार, शशि– इड़ा या नाभि के उर्ध्व भाग का सूर्य, सूर्य–पिंगला या तालु के अधोभाग का चंद्र, शश– संसारी, सिंह– मन, औधाघड़ा– जीवात्मा, गुफा– शरीर, उल्टाबाण– प्राणवायु, पारधी– मन, धरती– मूलाधार, आकाश– शुन्यचक्र, प्याला– ईंद्रिय, अमृत– अमरवारूणी, नदी– नाड़ी, नीर– श्वास, रामरसायेन– सहजामृत, हंस– आत्मा। चौसठ दीवा था – चौसठ कलाऐं। प्रतीक– 1.सांकेतिक – बंक, कल, सुषमना। 2. पारिभाषिक – डंठा – गंगा, पिंगला– यमुना, कुण्डलिनी– बालरंडा। 3. संध्यामूलक – चौसठ दीवा– चौसठ कलाऐं, दस द्वारा– कर्म व ज्ञानेइंद्रिया, नवग्रह– नवद्वार। 4. रूपात्मक – ऐसा प्रतीक जो किसी रूपक–विशेष के लिए कल्पित किया गया है।

जन भाषा का व्यवहारिक रुप का प्रयोग

कबीर भाषा के डिक्टेटर थे। कबीर के लिए काव्य साधन था सत्योदघाटन के लिए; इसीलिए भाषा लाचार सी इनके अनुयायी रहा। ये पहुँचे हुए संत थे। घुमक्कड धर्म के अग्रज, इनके काव्य में विभिन्न अंचल(प्रदेश) के भाव और भाषा समाहित रहे तथा कबीर दो टूक शैली में लोगों को समझाते थे। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने सधुक्कडी (साधुओं का भाषा) तथा डॉ. रामकुमार वर्मा ने पंचमेल खिचड़ी अर्थात् पांच आँचलिक भाषाओं का मेल कहा। जो वास्तव में तत्कालीन समाज की जनभाषा है। इसीलिए सरलता, सहजता व स्पष्टता है। रस, छंद, अलंकार में स्वाभाविकता के आधार पर साखी, शबद, रमैनी का उपयोग किया। वास्तव में कबीर के कथनी और करनी में एकता देखने को मिलता है (व्यवहारिक ज्ञान) न कि कोरा ज्ञान। संदर्भ के अनुरूप भाषा के विविध रुप लोक प्रचलित बोली, उपबोली, विभाषा, भाषा आदि रहा है। अशिक्षित, उपेक्षित, दिग्भ्रमित साधारण जनता की भाषा बनावटीपन से कोसों दूर सहज बोलने वालों की भाँति। इसीलिए अज्ञानियों के लिए आवाज बन सका। वास्तव में भाषा भावाभिव्यक्ति के माध्यम होता है।

सिध्दांत के अपेक्षा व्यवहार पक्ष की प्रतिष्ठा

कबीर अपने काव्य में कोई सिद्धांत, मत, वाद, प्रणाली, पंथ, धर्म, प्रचारित नहीं किया वरन् कबीर का व्यवहार ही एक जीवनशैली बन गया। हजारों लोग इनके पंथ (रास्ता) में अपना आदर्श सहज स्वीकार कर अनुयायी हो चलने लगे। क्योंकि कबीर का ज्ञान कथन स्वानुभूत रहा, कोई किसी का अंधानुकरण नहीं बल्कि तत्कालीन समय में संभव व्यवहारिक रूप और इसीलिए लोगों ने कबीर के सादगी व स्पष्टता को स्वीकारा। लेकिन कालांतर में कबीर को लोगों ने एक आडम्बरमय रूप में अर्थात् हिन्दू–मुस्लिम के खॉचा में ढ़लना चाहा। जो इनके वाणी के मूल सत्य और यथार्थ से कोसों दूर रहा है। अर्थात् कबीर ने जो करना चाहा, लोगों ने उसे फिर उसी गर्त में आज वापस डाल दिया।

व्यक्ति व समाज सुधार का अपराजेय व्यक्तित्व का दर्शन

कबीर व्यक्त्वि का मूल अपराजेय शक्ति है समकालीन जुल्मों–सितम को सहते हुए लोगों को सन्माार्ग में चलने के लिए प्रेरित करते रहना। ज्ञानी और योगी कबीर लोगों व समाज को सीखाते व समझाते रहे कि मुक्ति (चिरसुख) का आधार स्वयं के कर्म है जो सोच से चालित होता है अर्थात दैनिक जीवन में सतमय व्यवहार करना चाहिए। साथ ही सत्य के प्रति आस्था, त्याग, निष्ठा व समर्पण हो, तभी व्यक्ति को सुख मिल सकता है। यही अनुकरणात्मक व्यक्तित्व जो सत्य पर टिका हो समाज के नवनिर्माण का रहस्य के अंतः में होगा। कबीरजी ने व्यक्तित्व सुधार के जरिये समाज सुधार करना चाहते थे और इस कार्य के लिए वे

कभी थके नहीं, हारे नहीं, जीवन पर्यन्त अपने मार्ग पर चलते रहे। इनके समान व्यक्तित्व वाला कोई दूसरा व्यक्ति आज तक इतिहास में नहीं हो सका। इसीलिए कबीरदास जी के संतों का सिरमौर हैं।

सत्य के अनन्य साधक

कबीर सच्चे मायने में सत्य के समर्थक व प्रचारक रहे और इन्होंने सत्यनाम को व्यक्ति व समाज के विकास का आधार बताया। कबीरदास जी ने अपने जीवन तथा काव्य में इसी सत्यमार्ग पर चल कर लोगों को प्रेरित किया। सत्य (यथार्थ) के अनन्य साधक (उपासक) सतमार्ग के राही! हॉ, इस मार्ग में चलना सरल नहीं वरन् तलवार के धार पर चलने की तरह कठिन व कष्टसाध्य है– 'ज्ञान पंथ कृपाण के धारा।' सत्य पर टिकना नट की तरह रस्सी पर चलने की भाँति है जो असावधान होते ही जमीन पर गिर पड़ता है। जिसका शरीर व मन (आत्मा) शुद्ध (विकार रहित) व शक्तिमय (निश्चयात्मक निर्णय शक्ति) से पूर्ण नहीं। वे इस मार्ग पर न चले, क्योंकि इससे घर–बार को छोड़ने के साथ ही आलोचना–प्रत्यालोचना का सामना करना पड़ता है।

कबीर दर्शन का मूलाधार पारख सिध्दांत

कबीरदास व्यक्तित्व, ज्ञान और सत्य के पारखी थे। ये किसी भी वस्तु, ज्ञान और और कर्मों को अपने विवेक के आधार पर परख (जान बुझकर) स्वीकारने की बात कही। इन्होंने गुरू बनाने के पूर्व पहचानने को कहा– गुरू बनाइये जान के, अर्थात ज्ञान देने वाले गुरूओं को भी अपने विवेक की कसौटी में कसकर देखने के उपरांत स्वीकारना चाहिए। क्योंकि आज साधु संतो के भ्रमजाल व्यवहार में सद्गुरू (सच्चा गुरू) को पहचानना व समझना कितना कठिन हो गया है। वास्तव में कबीरजी ने ज्ञान और गुरू को हमेशा परखकर अपनाने को कहा है। जिससे सद्ज्ञान (ज्ञान का ईश्वरीय रूप) को समझने में कोई धोखा न हो।

वैज्ञानिक सामाजिक सोच के प्रति विश्वास

कबीर वाक्य वैज्ञानिक सोच (क्रमबद्ध ज्ञान) और तार्किक शैली पर आधारित है, क्योंकि कबीर का उपदेश व ज्ञान का प्रचार कोई कल्पना लोक की वस्तु नहीं वरन् व्यक्ति का समाज में जीवनयापन करते हुए अनुभव है। कबीर काव्य कोई मिथकीय अविवेकीय वस्तु को सिद्धि नहीं करता, वह ईश्वर के संवेद्य ज्ञानात्मक रूप को सर्वसाधारण के लिए सुलभ कराता है। कबीर अपना विचार के प्रति पूर्णतः दृढ़ रहे, मन में किसी तरह से भ्रम या संशय नहीं। कबीर काव्य स्वानुभूत होने के कारण वैज्ञानिक व तार्किक है फलस्वरूप आज भी उपयोगी व प्रासंगिक है।

ज्ञान (सत्य) का अनन्य भक्त

कबीर का व्यक्तित्व सीधा–साधा व दृढ़ निश्चयी थे। इसीलिए वे सत्य को जो सदा (सत्य शिवं सुन्दरं) कठोर होता है, आत्मसात कर पाया। कबीर का ज्ञान सतमय रहा अर्थात् संशय, भ्रम से दूर विशुद्ध रूप। सतज्ञान, सत्मुखी से ही मिल सकता है, और जिसके पास सत्य हो ऐसा व्यक्ति को कबीरजी ने गुरू स्वीकारा और कालांतर में गुरू से आगे निकल गुरु से गुरुतर हो गये। कबीर का व्यक्तित्व ज्ञान (सत्य) का पर्याय है। कबीर के प्रसिद्धि का आधार ज्ञान है, वह ज्ञान जो वैज्ञानिक व तार्किक हो। ऐसा ज्ञान व ज्ञानी के प्रति कबीर बच्चों के भाँति अनन्य भक्ति भी रखता था।

कबीर का व्यक्तित्व ही काव्य है, जो वैज्ञानिक, व्यवहारिक व तार्किक ज्ञान पर आधारित है। इसीलिए कबीर के उपदेश, प्रचार, सत्संग आदि आज भी सामाजिक समरसता के लिए प्रासंगिक है क्योंकि आज 21 वीं सदी में भी राज व समाज धर्म, सम्प्रदाय, जाति, वंश, कुल, रंगभेद आदि के आधार पर चालित होने लगा है। व्यक्ति व समाज को मात्र कोरा ज्ञान मिल पाया है। कबीर ऐसों के लिए पोथी में भटके व रमे हुए ज्ञानी कहा है जो अपने को योगी, सिद्ध, व नामी घोषित कर ईश्वर का स्थान, (मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा, गिरजाघर आदि) बनाकर अपना उल्लु साधारण जनता को भ्रम में डालकर सीधा करते रहे हैं।

लोकतांत्रिक गणराज्य देश में कबीर का समता व ज्ञानमूलक विचार का जो व्यवहारिक रूप में संभव है को अपनाने की जरुरत है। तभी देश की जनता का राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सर्वांगीण विकास संभव हो पायेगा। सतनाम व सद्व्यवहार ही विश्व कल्याण का मूलाधार है को अपनाना होगा। कबीर का काव्य मानववाद का प्रतिष्ठा करता है। जहाँ मानव मानव में किसी भी तरह से भेदभाव न हो। तथा सबका साथ सबका विकास करने के लिए खुला मंच सादगीपूर्ण जीवनशैली व वैचारिक उच्चता ही इस पंथ के अनुयायियों का पहचान बन पड़ा है।

संदर्भ

1. बीजक (पारख प्रबोधनी व्याख्या) भाग 01 एवं 02 – अभिलाषदास
2. कबीर ग्रंथावली – सं. श्यामसुन्दर दास
3. कबीर – डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. कबीर दर्षन – अभिलाष दास
5. कबीर अमृतवाणी – अभिलासदास
6. कबीर पंथ का उद्भव एवं प्रसार – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
7. कबीर पंथ एवं छततीसगढ़ का सामाजिक विकास – डॉ. राधेष्याम पटेल
8. संत कबीर और उनका कबीर पंथ – डॉ. सालिकराम अग्रवाल
9. कबीर – सं. विजयेंन्द्र स्नातक
10. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल
11. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – गणपतिचंद्र गुप्त
12. हिन्दी काव्य की प्रवृतियॉ – डॉ. उतकर
13. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल